31/7/19

विद्यालय संगठन का सिद्धांत :—

विद्यालय संगठन का सिद्धांत बालकों के लिए पढ़ने की व्यवस्था, शिक्षकों की व्यवस्था, खेलकूद सामग्री आदि की व्यवस्था से है। अर्थात् विद्यालय संगठन बालकों को शिक्षा प्राप्त करने में मदद करता है यह बालकों के ज्ञानेन्द्रियों को परिमार्जित कर मानसिक स्तर को उन्नत करने का प्रयास करता है, उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत तथा समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्वों का आभास कराता है, विद्यालय संगठन का कार्य है, विद्यालय के लिए सभी आवश्यक भौतिक एवं मानवीय संसाधन प्रचुर मात्रा में जुटाना। शिक्षा के उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए विद्यालय संगठन के प्रमुख सिद्धांत निम्न हैं विद्यालय

1. बालकेंद्रित :—

बालकों का समन्वय विकास करना विद्यालय का मुख्य उद्देश्य है, इसलिए संगठन बालकेंद्रित होना चाहिए यह संगठन ऐसा होना चाहिए जिसके द्वारा बालकों की अभिरुचियों, शक्तियों, संवेगों एवं मूल प्रवृत्ति तथा उनकी विभिन्न योग्यताओं को सभी दिशा में विकसित किया जा सके। विद्यालय में ऐसा वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए, जिसमें बालक का शारीरिक, मानसिक,

सामाजिक एवं चारित्रिक आदि गुणों का विकास आसानी से हो सके। विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं को बालकों के अनुभवों तथा उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को ध्यान में रखकर व्यवस्थित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से बालक को सर्वोत्तम विकास के लिए उचित सुविधाएँ उपलब्ध की जा सकेगी।

2. समाज केंद्रित :— Society

शिक्षा का उद्देश्य बालक को समाज का एक सक्रिय, उपयोगी, एवं कुशल सदस्य बनाना है, अतः विद्यालय संगठन बालकेंद्रित होने के साथ-साथ समाजकेंद्रित भी होना चाहिए। विद्यालय संगठन में बालकों की विकास संबंधी क्रियाओं के आपोषन के साथ-साथ समाज के प्रति प्रगति, उचित व्यवस्था आदि का होना आवश्यक है। संगठन के द्वारा समाज में गत्यात्मक (गतिशील) उद्देश्यों को भी अभिव्यक्त किया जाना चाहिए, जिससे समाज भावी प्रगति की ओर अग्रसर हो सके। इसलिए विद्यालय संगठन बालक की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यों संस्कृतियों आदि पर आधारित होना चाहिए।

जैसे — भारत एक कृषि प्रधान देश है, फिर भी यहाँ खाद्यान्न की कमी रहती है। इसलिए विद्यालय में कृषि की आधुनिक

विधियों के शिक्षा पर बल दिया जा रहा है, जिससे अनाज का अधिक-से-अधिक उत्पादन हो।

C.work 05/7/19 3.

लोकतंत्रीय सिद्धांत :—

जनतंत्र की सफलता हमारे विद्यालयों पर ही निर्भर है, ये विद्यालय ही हैं जो जनतंत्र के स्तंभों (नागरिकों) अर्थात् भावी नागरिकों का निर्माण करते हैं, बालकों में आदर्श नागरिकों के गुणों का विकास विद्यालय की व्यवस्था, क्रियाकलाप एवं परंपराओं के माध्यम से किया जाता है, इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय का संगठन लोकतांत्रिक सिद्धांतों एवं परिक्रियाओं के अनुसार हो, इसके लिए संगठन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए—

1. द्वैविलत्व की भेदों को ध्यान में रखकर विद्यालय में विभिन्न क्रियाओं की व्यवस्था किया जाना चाहिए।

2. अवसर की समानता प्रदान करने के लिए समुचित व्यवस्था किया जाना चाहिए।

3. बालक की स्वतंत्रता को स्वीकार किया जाए, तथा छात्रों को स्वतंत्रता प्रदान की जाए।